संस्कृत साहित्य में गद्यकाव्य का विकासक्रम

डॉ0 सविता शर्मा

एम0 ए0, पी0एच0डी0

+2 संस्कृत शिक्षिका

म.र.द.बा.उ.वि. सीतामढ़ी

संस्कृत साहित्य में गद्य का प्रयोग अत्यंत प्राचीनकाल से होता आया है प्राचीन काल में पद्यों को अपेक्षा गद्य को अधिक सम्मान था। गद्य के विषय में एक उक्ति है 'गद्यं कविनां निकर्ष वदन्ति' अर्थात् गद्य कवियों की कसौटी हैं। इस प्रकार कृष्ण यजुर्वेद, ब्राहण्रंथों, उपनिषद् ग्रन्थों, निरूक्त, महाभारत प्रमृर्ति ग्रन्थों से संस्कृत गद्य साहित्य की संवर्द्धन शील परम्परा उपलब्ध हुई तथा कालान्तर में सैंकड़ो टीकाओं, व्याख्याओं कथाकाव्यों, आख्यायिका ग्रन्थों और चम्पू नाटक आदि में गद्य का प्रॉढ रूप दीख पड़ा। इतना ही नहीं तत्वज्ञानसंबंधी दर्शन, विद्वान विषयक ज्योतिष ग्रन्थों और भाषा शास्त्र सम्बन्धी व्याकरण के ग्रन्थों आदि में गद्य को विकसित होने की पूर्ण सुविधाएँ प्राप्त हुई।

ऐतिहासिक गवेषणाओं से यह स्पष्ट होता है कि वैदिक साहित्य मे संस्कृत गद्य के प्रारंभिक रूप दर्शन होते हैं। कृष्णयजुर्वेद में पद्यबद्ध मंत्रों के साथ ही उनके विनियोग एवं याज्ञिक क्रियाओं की शास्या एवं प्रशंसा करने वाला अंगगद्यमय हैं। अर्थर्ववेद के 15वे तथा 16 वें काण्डों में गद्यांश पाए जाते हैं । व्रात्य का निस्पण करते हुए अर्थवेद में लिखा हैं–

''व्रात्य आसीदीयमान एवांस प्रजापतिः समैरयत्। स प्रजापतिः

सुवर्णमात्यन्न्पश्य्यत्तव्राजनयत्

(0अर्थर्व 15/1'')

वैदिक गद्य सरल, सुबोध, तथा समासरहित है किन्तु इसमें साहृश्यमूलक अलंकारो के प्रयोग से विशेष रोचकता आ गई हैं।

ब्राह्म्ण ग्रंथों का गद्य– इस प्रकार वेदों के अन्नतर भी ब्राह्म्ण ग्रन्थों ने गद्य मिलता है। ब्राह्मणकाल में संहिता या मंत्रभाग की व्याख्या प्रस्तुत की गई । इसमें यज्ञानुवानों के विधि विधानों एवं महात्म्यों का वर्णन भी मिलता है यह समस्त व्याख्या भाग प्रायः गद्य में रचित है। ब्राह्मण तथा आरण्य ग्रन्थों में वैदिक गद्य का विकसित रूप मिलता है यह गद्य सामान्यतः अव्यवस्थित है किन्तु आख्यान रूप में जहाँ गद्य प्रयुक्त है वह रोचक सरल और स्पष्ट है ऐतरेय ब्राह्मण एक गद्धांश यहाँ प्रस्तुत हैः–

अग्निवै देवानामवयोविष्णुः पदमस्तदुन्तरेण

सर्वा अन्या देवता । आग्नावैष्जवं

पुराडाश निर्वयन्ति दीक्षणीयभेकादश्ज्ञापानां

सर्वाभ्य एवैनं तहेवताभ्योडनन्तरायं निर्वयन्ति

उपनिपद का गद्य – ब्राह्मण एवं आरण्यको के गद्य के बाद उपनिषदों का गद्य माता हैं। यह गद्य सरल, ऋजु और जीवन्त हैं। व्रहदारण्यक, छान्दोग्य, तैतिरीय, तथा कौषीतंकि उपनिषदों की रचना गद्यमय हैं। उपनिषदों के गद्य में विनोद का आर्कषक है इसमें आख्यान रूपों की प्रचुरता और पदों की मन भावना पुनरूक्ति होने से लालित्य की सृष्टि हुई है। यह सरल एवं दीर्ध समासविहिन प्रकृति गद्य है। तैतिरीयोप्रनिषद के आचार्यनुशासनम् प्रसंगस्वे एक उहरण यहाँ प्रस्तुत है– '' वेदमनूच्चाचार्योडन्तव विनभनुशास्त्रि । सत्यंवद। धर्मचर। स्वाध्यायांम्ना प्रभदः। आचार्याय प्रियं धनभाहृत्य प्रजातन्त्र या व्यवच्छेसी। सत्यान्न प्रमदितव्यम् भूत्य न प्रभदितव्यम् धर्मान्न प्रभदितव्यम्। कुशलन्न प्रभदिवत्यम्। स्वाध्या यप्तवचनाम्यां न प्रयदिवयम् । ..... श्रद्वयादेययम् अश्रदादयम् श्रिया देयम। छिया देयम।

पं0 चन्द्रशेखर पाण्डेय के शब्दो में उपनिषदों का गद्य स्वस्थ, प्रसादगुणयुक्त, निराडम्बर और चुहल से भरा होने के कारण अतीव आकर्षक हैं । जहाँ वैदिक गद्य, यज्ञ–याग की काण्ठमयी प्रक्रिया के विस्तार के कारण नीरस है वहाँ

औपनिष्ठ–दिनक गद्य स्वच्छन्द और स्वाभाविक है उसमें आख्यात रूपों की प्रचुरता है पदों की रूचिकर पुनक्ति है और लम्बे समासों का प्रायः अभाव है।

सूत्रसाहित्य में गद्य– सूत्रगद्यशैली का प्रयोग

श्रौतसूत्र एवं गृह्यःसूत्र से प्रांरम्भ हुआ और फिर तो अनेक सूत्र ग्रन्थों की रचना हुई सूत्र–शैली में षट् वेदाङो की रचना भी हुई। यास्क (700 ई0पू0) ने 'निरूक्त की पाणिनी (500ई0पू0) अष्टाध्यायी की रचना सूत्रो में की है। सूत्रों की संक्षिप्तता के कारण उन्हें टीका से भाष्य है। है अतः पाणिनी ने अष्टाध्यायी के भाष्यों की रचना हुई। ये भाष्य गद्य में है इनमें पतञजलि का महाभाष्य सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।

बौद्य–गद्य– बौद्यों का संस्कृत गद्य वैदर्भी शैली से होते हुए भी गौड़ी की ओर झुका हुआ हैं। इसमें अलंकारों का सुन्दरविनियोग है, भाव गाम्भार्य एवं विशदवर्णन है किन्तु भाषा अनगढ़ एवं अव्यवस्थित है।

दार्शनिक गद्य– दार्शनिक गद्य हमें प्रायः सूत्रों की व्याख्या के रूप में उपलब्ध होता है। षड दर्शनों के सूत्रों की महाभाष्य व्याख्या अत्यंत तर्कपूर्ण निर्मल एवं गहन गंभीर हैं। शवरस्वामी ने मीमासा सूत्रों का भाष्य किया उनकी गद्य शैली का उदाहरण यहाँ प्रस्तुत हैं–

''इच्छयात्यानमुपलभाभहें। कथमिति? उपलब्ध पूर्वेहामिप्रेते भवतन्छिा यथा मेरूभून्तरण यान्यगज्जातीयैरमैनलबधपूवौ स्वादूनि वृक्षफलानि ने तानि प्रत्यस्माकमिच्छा भवति।''

इस प्रकार न्यायसूत्रों पर हमें वात्स्यायन के भाष्य में संस्कृत दार्शनिक गद्य के दर्शन होते है। शंकराचार्य जी ने वेदान्तसूत्रों के भाष्य में प्रौढ़ रूप के दर्शन होते हैं ।

शंकराचार्य का गद्य– दार्शनिक गद्य जटिल परिभाषिक पदावली से युक्त रोचकता का अभाव, तर्कमयता का प्राधान्य तथा बाल की खाल खीचने वाला है। शास्त्रीय एवं टीका गद्य में शंकराचार्य के भाष्यों का गद्य प्रौढ़ एवं दार्शनिक विचारों को वहन करने में सक्षम हैं।

शंकराचार्य का समय आठवी शताब्दी है। उन्होंने ब्रह्मसूत्र उपनिषद् एवं–गीता के भाष्य प्रस्तुत किए हैं। ब्रह्मासूत्र के भाष्य से शंकराचार्य के गद्य का एक उदृरण यहाँ प्रस्तुत है–

''चेतनं ब्रह्मौवकमद्वितीयं जगताः कारणमिति यदुक्तं तन्नोप पदति कस्यादुपसंहार दर्शनात्। इतहि लोके कुलाभादयों धटपटादीनां कर्तारो मृण्डचक्र सूत्राधनेककारकापसहरिण संगृहीत साधनाः सन्तस्ततत्कार्य कुर्वाषा हृश्चन्ते ब्रह्मण चा सहायं तवभिप्तेत तस्य साधनान्तरानुपसंग्रहे सती कधं रत्रट्लभुपपद्यैत। तस्मान्य ब्रह्म जगत्कारणमिति चेन्नेष दोषः। ''

यह पद्य तर्कपूर्ण एवं दार्शनिकता से अति प्रोत है अति गंभीर एवं नीरस है उनके वाक्य सारगर्भित, प्रौढ़ और प्राञजल है। उनकी शैली तर्कप्रवण तथा विवेचना प्रधान है। शंकराचार्य के गद्य के संबंध में विद्वानों का मत है कि यह माधुर्य एवं प्रासदगुण सम्पन्न तथा साहित्यिक है यथा–

''नहि पदम्यां पलायितुं पारयमाणों जानुम्यां रंहितुमहर्ति'' पं0 बलदेव उपाध्याय के शब्दों में ।।

शोकराचार्य के गद्य की भाषा निराली है उनके वाक्य सारणर्भित प्रांजल हैं।

पौराणिक गद्य– पुराणों में तों वैदिक और

लौकिक संस्कृत के गद्य का निम्न जुला रूप दीख पड़ता है। पौराणिक गद्य नितांत आलंकारिक व प्रासदिक है तथा श्री मद्भागवत व विष्णुपुराण के गद्य में निःसन्देह साहित्यिक गद्य का समग्र सौन्दर्य विद्यमान है विष्णुपुराण में गद्य का यह अवतरण विद्यमान है।

''यथैव व्योम्नि वहिणर्पिण्डोपमं त्वामहगपश्यं तधैवाद्यागुतों गतमत्यत्र भगवत किचित्र प्रसादीकृते विशेषमुपन्नक्ष्या। भत्युक्त भगवत सूत्रेण निज कठादुन्भूच्चसयम तकनाम महामणि बरमवर्ताम एकान्ते नयस्तम्।

संस्कृत गद्य के दो काल है – एक वैदिक दूसरा लौकिक। लौकिक गद्य का प्रांरभ महाभारत से माना जाता है। महाभारतीय गद्य सरल, सुन्दर एवं रोचक है अनेक स्थलों पर यह गद्य अलंकृत भी है किन्तु स्वामाविकता इसका विशेष गुण हैं।

लौकिक गद्य–काव्यः– अलंकृत गद्य का उद्भव विकास गद्य–काव्य की कला का प्रचार दण्डी, सुबन्धु, और बाण से कई शताब्दी पूर्व ही रहा होगा किन्तु इन काव्यकारों ने अपने अनुपम तथा उत्कृष्ट गद्यकाव्यों के प्रभाव से अपने पूर्ववर्ती लेखको को ऐसा आच्छादित कर दिया कि उनमें से बहुतों के नाम उपलब्ध नही होते। दण्डी, सुबन्धु और वाण गद्यकाव्य के विकास काल की चरनोन्नति के प्रतिनिधि लेखक है इनसे पूर्व दीर्धकाल तक साहित्य के इस अंग का अभ्यास होता रहा होगा यह स्वीकार करने में कोई आपति नही। वररूचि कृत चारूमति, रोमिल्लकृत शुद्रक कथा तथा श्रीपाल कुत तरंगवती'' इस कथन की पूष्टि करते है यद्यपि ये लेखक और ये ग्रन्थ हमारे लिये केवल नाममात्र ही है तथापि वे गद्यकाव्य की उत्तरोत्तर वृद्धि और विकास के परिचायक है ।

दण्डी– गद्यकाव्य के कवियों में दण्डी आद्य होने के कारण प्रंशस्य है। गध का प्रारंभ यधपि वैदिक साहित्य से हो चुका था, परन्तु लौकिक साहित्य का संस्पर्श कराने वाले आचार्यो में दण्डी लौकिक साहित्य शिरोमणि है उनके अनुभवों का सशय प्रत्येक व्यक्ति के जीवन पथ निर्वेश देता जिसे उन्होंने शब्द के माध्यंम से साहित्य का समर्पित किया है।

दण्डी की काव्य चातुरी देखकर भारतीय आलोचक ने दण्डी को एक श्रेष्ठ कवि के रूप में पौजपुन्येन उद्घोषणा की है– कवि दण्डी, कविदण्डी, कविदण्डी न संशयः। '' मधुराविजय'' महाकाव्य की प्रणेता गंगा देवी ने दण्डी को उच्चकोटि का कवि स्वीकार किया है। '' आचार्य दण्डिनोः वाचामाचान्तामृतसंपदाम्।

विकासो वेधसः पत्यनयाविलासमणि दर्पणम्।।

आचार्य दण्डी की कृतियों की समीक्षा अन्य कवियों के करते हुए एक समालोचन का कथन हैं–

''उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्।

वण्डिनः पदलालित्य त्रयोऽत्येकैकतोऽधिकाः।।

संस्कृत साहित्य में जहाँ कविवर कालिदास उपभा के लिए भारवि अर्थ–गाम्मीर्य के लिए वही दण्डी पदलालिप्य के लिए प्रसिद्ध है। यही विशेषता उनके काव्य में गौरव गरिमा की अभिवृद्धि करती हैं।

शार्ङ्गधर पहृति 'में राजशेखर' ने

लिखा हैं– ''त्रयोऽग्नयस्त्रयों वेदास्त्रयों देवास्त्रयों गुणाः।

त्रयोदण्डिप्रबन्धाश्य त्रिषुलोकेषु विश्रुताः।।

अर्थात् दण्डी के तीन प्रबन्ध को तीन अग्नि तीनदेव, तीनवेद और तीन गुणों के समान तीनो लोकों से विश्रुत बताया गया है। इस प्रकार दण्डी के तीन प्रबन्ध है– काव्यादर्श, अवन्ति सुन्दरी कथा और दशकुमार चरित।'' दण्डी की शैली ने सरसता, माधुर्य, तथा प्रासादिकता द्रष्टव्य है उनमें किसी प्रकार का शब्दाडम्बर नही है इस कारण स्वाभाविक प्रवाहपूर्ण मंजी हुई मुहावरेदार सुशोमित गद्य का आर्दश है, वाक्य प्रायः छोटे है। वाक्यविन्यास अयासजनक नही अंवितु ओजस्वी ललित एवं सुव्यक्त है स्पष्ट अर्थ, रस का सम्यक पोषण तथा कल्पना की उर्वरता दण्डी की शैली के विशेष गुण हैं।

अनुप्रासमय तथा मनोरम पद्विन्यास में वे कुशल हैं। सुन्दर, सुभग, सुबोध गद्धलेखक के कारण दण्डी की ख्यति उचित ही है–

''आचार्य दण्डिनोः– वाचामाचान्तामृतसपदाम्।'

संक्षेप में दण्डी संस्कृत साहित्य के जाज्वलयमान् मणि है। वे क्रान्ति कवि, श्रेष्ठकाव्य–शास्त्री थे और प्रशंस्य गद्धकाव्यकार थें।

सुबन्धु– दण्डी के उपरांत सुबन्धु के प्रांजलमय काव्य स्वरूप मिलता हैं। इनका वासवदता नामक गद्यकाव्य प्रत्यक्षर श्लेषमय है। चन्द्रशेखर पाण्डेय के शब्दो में' ''सुबन्धु' की यह कृति संस्कृति गद्यकाव्य के उस रूप का प्रतिनिधित्व करती है जिसमें

कथानक अतिकधु रहता है। वर्णन विस्तार का प्राधन्य होता है पाण्डिव्यकल्पना का स्थान ले लेता है।'' सुबन्धु की शैली में अतिशयोक्ति अनुप्रास तथा समास की प्रधानता है इनकी रचना शैली, गौड़ी रीति का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती है। इनकी गर्वोक्तिसत्य है।

''प्रत्यक्षरश्लेषमयअपंच विन्यासबैदेग्घयानिधिप्रबंधम्।

सरस्वतीदतवरप्रसादश्चक्रे सुबन्धुः सुजनैकबन्धु।।

अर्थात्– मैंन एक ऐसे विलक्षण काव्य की रचना की है जिसके प्रत्येक अक्षर

का ऐसा दुर्गभ महाकाव्योत्तर है कि उसमें वास्तविक काल सौन्दर्य को ढूढ़ निकालना सर्वथा कठिन हो जाता है। सुबन्धु में न तो दण्डी का सा हास्य ओज तथा वैचित्रय है और न वाण की सी उर्वर कल्पनाशक्ति तथा वर्णण प्रतिमा यहाँ आडम्बर कृमियता तथा असंगति ही अधिक मिलती है एक ही क्रिया पर विपुलकाय वाक्य की स्वना में सुबन्धु अद्वितीय है वैसे संवादों में वाण की भॉति छोटे वाक्यों का प्रयोग मिलता है किन्तु सर्वत्र श्लेष की बहुलता है।

वाणः– जिस प्रकार समग्र संस्कृत साहित्य में कवि कालिदास अपने रचना गौरव कल्पना वैचित्र्य के कारण पद्य साहित्य में गौरवपूर्ण तथा श्रेष्ठतम् है उसी प्रकार गद्यकाव्य की रचना के कविवर वाणभट्ट सर्वातिशाली व्यक्तित्व् सम्पन्न कवि है। संस्कृत साहित्य के गद्यकाव्यों के लेखको में वाण का स्थान भूर्धन्य है यदि गद्यकवियों की कसौटी है तो वाण इस कसौटी पर सर्वाधिक सफल है। वाणभट्ट की इस सफलता का राज उसकी अनुपमेय अभिव्यक्ति एवं कल्पना कौशल अद्वितीयरचना शैली और ललित पदविलास में अन्तर्निहित है वाण की काव्य चातुरी को देखकर सोड्ढ़ल ने उन्हें कवि चक्रवती कहाँ तों गोवर्धनाचार्य के अनुसार वाण सरस्वती के अवतार थे ''वाणी वाणा बभूवह'' धर्मदास ने उनकी तरूणी लावण्य से उपना दी जो नितनवीन लगती है– रूचि

रूचिर स्वरवर्णपदा रसभावती.....

वाणस्य मधुरशीलस्य । गंगादेवी वाणभट्ट की सुमधुर भारती से वीणा की मधुर झेकार सुनती है।

''वीणापाणि पराभृष्ट..... महवाणस्य भारतीम् ।''

वाण द्वारा लिखित चार ग्रंथ है– चण्डी शतक, पार्वती परिचय, हर्षचरित तथा कादम्बरी

गद्यकाव्य संसार वस्तुतः वाणभट्ट की उच्छिष्ट प्रतिभा और कल्पनाओं के सहारे जीवित है अतः परवर्ती जितने भी गद्यकाधकार है उनपर वाणभट्ट का स्पष्ट प्रभाव है। वाण्भट्ट की रचना में संस्कृत गद्य साहित्य का चरमोकर्ष पाया जाता है । उनकी दो रचनाएँ है।

–कादम्बरी + हर्षचरित। कादम्बरी वाणकी ही नहीं समस्त संस्कृत साहित्य की सर्वोत्कृष्ट रचना है वाण ने हर्ष चरित के प्रांरभ में गद्यशैली का आदेश इन शब्दों में व्यक्त किया है–

''नवोडथो जातिरग्राम्या..... कृत स्नमेक्त दुष्करम।।

वाणभट्ट असाधारण प्रतिभाशोली गद्यलेखक है। सानुप्रास, समासान्त पदावली, अपरिभितशब्द भण्डार, प्रकृति के यापक और मनोहारी चित्र, कोमल+भीषण कल्पना मानवीयमूल्यों की सूक्ष्म एवं हृदयकारी परिकल्पना आदि शक्ति का सामूहिक दर्शन कोई करना चाहता है तो सर्वांगपूर्ण दर्शन गद्य काव्यवकार वाण के काव्य का अनुशीलनक करना चाहिए। वाणभट्ट इन्ही विशेषताओं के कारण अपने युग में लोकप्रिय हो गए थे परिणामस्वरूप अपने युग में लोकप्रिय हो गए थे, परिणामस्वरूप सहृदय आलोचको ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की है।

– वाणोच्छिष्ट जगत्सर्वम्

हर्षचरित में कुल आठ उच्छवास है प्रथम तीन उच्छवासों में वाण ने अपनी आत्मकथा लिखी है। शेष में सम्राट हर्षवर्द्धन का जीवन चरित अंकित हैं काव्य सौष्ठव की दृष्टि से इसमें कई विशेषताएँ है।

हर्षचरित के प्रारंभ में गद्यशैली का आदर्श इन शब्दों में व्यक्त किया है–

'' नवोअर्थो जातिरग्राम्या श्लेषोडविलबभू स्फुटी विकटाक्षार बन्धश्च कृत्स्नमेकत्र दुष्करम।

वाण ने अलंकारो का प्रयोग भी अत्यंत स्वाभाविक ढ़ंग से किया है उनके लम्बे समय यदि गिरि नदी के उद्धाम प्रवाह की भाति है। तो उनकी श्लिष्ट उपमाये इंद्रधनुष की छाया की भॉति उसे रंगीन बना देती है। साथ ही उनके अनुप्राप्त विलक्षण स्वर माधुय की सृष्टि करते है । रसोपमा का उत्कृष्ट उदाहरण वाण की इन पक्तियों मे मिलता है–

''क्रमेण च कृतं में वपुषि बसंत इव मधुमासेन मधुकर एवं मदेन नवयौवनेन पद्म।'' इन्होने प्रकृति के रमणीक एवं विराट्– दोनो स्वरूपा की झॉकी प्रस्तुत की है।

''प्रसन्नराधव'' नाटक के रचयिता ने वाण को कविताकामिनी के हृदय मन्दिर में निवास करने वाला साक्षात् कामदेव कहा हैं– ''हृदयवसतिः पंचवाणस्तु वाणः'' गंगा देवी ने वाणी की भारती को वाणी नौ सुमधुरतान हरने वाली कहा है।

औडयवेद वादीभ सिंह– इनका स्थिति काल विवादास्पद रहा है।

डा0 कीथ के शब्दों में 'कादाम्बरी से प्रतिस्पर्दा करने का दूसरा प्रयत्न वादीभसिंह के गद्य चिन्तामणि में परिलक्षित होता है। इन्होंने वाण का अनुकरण किया है । इस कृति में कला सौन्दर्य एवं सरस उपदेश नीति वाक्यों द्वारा समन्वित हो, रूचिर पदयोजना प्रस्तुत करते है। मनोरंजन तत्व वोइस कथा का प्राण है।

धनपाल की तिलकमंजरी– धनपाल मुंजराज तथा

उनके भतीजे भोजराज के सभा

पण्डित थे। इनकी तिलकमंजरी नामक कथा की कादम्बरी के अनुकरण पर रचित गद्यकाव्य है धनपाल ने वाण की भौति अपनी कथा की नायिका तिलकमंजरी के आधार पर ही अपनी रचना का नामकरण किया है।

सोडढ़ल की उदयसुन्दीकरथा– इनका समय 11 वी शदी है इनकी उदयसुन्दरी कथा आठ उच्दवासों में चमत्कारपूर्ण कवि कौशल से संयुक्तगज पधात्मक रचना है।

वामनभट्ट वाण वेभभूपालचरित– इनका नाम

वामनभट्ट तथा 'वाण' उपाधि थी इनका समय 1500 है। वाण की हर्षचरित रचना के अनुकरण पर अपने अक्षय दाता वेमभूपाल पर आख्यायिका लिखी। इनका पद्य विन्याास मनोहर है अलंकार योजना सरस है तथा अर्थ का प्रकटीकरण सुन्दर हैं।

वल्लाल कवि का भोजप्रबन्दा– भोजप्रबन्ध

नामक गद्यपद्यगयी रचना के रचचिता वल्लाल ने प्राचीन कवियों के पद्य चुनकर रखे। इन्होंने नीति और काव्य का मनोहारी सम्मिश्रण किया है। आधुनिक काल के संस्कृत गद्य के प्रमुख लेखक पं0 विश्वेश्वर पाण्डेय (जन्म लगभक1780) इनका ''मन्दार मंजरी'' नामक ग्रथ कादम्बरी की गद्यशैली का अनुकरण करके लिखा गया गद्य ग्रन्थ है। यह कल्पना और पौराणिक रचनाओं पर आधारित है।

पं0 अम्बिकादत व्यास रचनाकाल 1858 से 19010 ई0 इनका शिवराज विजय संस्कृत का गौरवपूर्ण उपन्यास है । उपन्यास में विशद वर्णन के साथ ही घटनाओं की तीव्र यदि गतिशीलता भी है। उनकी शैली में प्रासादिकता और प्रवाह के साथ परिष्कृत प्रौढ़ता भी है। इसमें वाण और दण्डी की सफल अनुकृति दिखाई पड़ती है।

पं0 हृषीकेष महाचार्य (1850–1913)– आधुनिक संस्कृत गद्यकारो में इनका महत्वपूर्ण स्थान है इनके निबंधों की भाषा प्रज्जल और प्रवाहमयी है उनके जैसी सरल व्यंजन शैली आधुनिक गद्य लेखकों में बहुत कम देखी गई है। इनकी सुप्रसिद्ध ''प्रबंध मंजरी'' में ही विद्वानों ने व्यंग्य शैली का प्रथम प्रादुर्भाव जाना है।

पण्डिता क्षमाराव– इनका जन्म 1890 में और स्वर्गवास 1954 में हुआ। संस्कृत गद्यकारों क्षमाराव एक मात्र यशस्वी महिला लेखिका है। इनकी अनेक गद्ध रचनाओं में कथा 'मुक्तावली' विशेष प्रसिद्ध है, इन्होंने संस्कृत गद्ध में लधु कथा लिखनें की आधुनिक शैली अपनाई।